डॉ.आनंद वास्कर,
एम.ए.,एम.एड.,पी-एच.डी.
प्राचार्य - आचार्य जावडेकर
शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय
गारगोटी-४१६ २०९ ।

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री चिंदगे एस.पी. ने शिवाजी विश्वविद्यालय को एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत " हिन्दी भाषा की दृष्टि से पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन " लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में लिखा है । पूर्व योजनानुसार यह कार्य संपन्न हुआ है । जो तथ्य इस प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं,मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं ।

स्थल - कोल्हापुर ।
दिनांक २९: ६ :१९९५ ।

(डॉ.आनंद वास्कर)
शोध-निर्देशक ।

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

प्र मा ण प त्र (प्रख्यापन)

मैंने हिन्दी भाषा की दृष्टि से पूर्वमाध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन • लघु शोध-प्रबन्ध डॉ.आनंद वास्कर जी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल्.(हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है। इस प्रबन्ध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

(श्री.चिंदगे एस.पी.)
शोध-छात्र

कोल्हापुर।
दिनांक २९: ६ : १९९५।

••

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
	प्राक्कथन	
प्रथम अध्याय -	विषय परिचय	1 - 30
	अ. पाठ्यचर्या	
	आ. पाठ्यक्रम	
	इ. पाठ्यपुस्तक	
	ई. पाठ्यपुस्तक निर्माण प्रक्रिया ।	
द्वितीय अध्याय	हिन्दी भाषा की संरचना	31 - 43
	अ. पूर्व माध्यमिक स्तर की दृष्टि से संरचना ।	
	आ. पूर्व माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा अध्यापन का उद्देश्य ।	
	इ. पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों द्वारा अवगत भाषिक ज्ञान वाचन,लेखन,भाषण ।	
	ई. पूर्व माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा हिन्दी अध्यापन के उद्देश्य ।	
तृतीय अध्याय -	पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन - भाषिक उद्देश्यों के आधार पर	44 - 179
	अ. कक्षा पाँचवीं;वाचन,लेखन,भाषण ।	
	आ. कक्षा छठी : वाचन,लेखन,भाषण ।	
	इ. कक्षा सातवीं : वाचन,लेखन,भाषण ।	
चतुर्थ अध्याय -	पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी अध्ययन-अध्यापन और पाठ्यपुस्तकें	180 - 185
	अ. कुछ संबद्ध नमुना छात्रों से साक्षात्कार ।	
	आ. कुछ संबद्ध नमुना अध्यापकों से साक्षात्कार ।	
	इ. कुछ संबद्ध नमुना शिक्षक-प्रशिक्षकों से साक्षात्कार ।	
	ई. निष्कर्ष ।	

पंचम अध्याय - उपसंहार - 186 - 197

सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूचि ।

साक्षात्कार प्रश्नावली ।

प्राक्कथन

विषय प्रवेश -

प्राक्कथन

शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर,हिन्दी (एम.फिल) विभाग का छात्र होने के नाते प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक खुशी हो रही है। एम.फिल.में प्रवेश लेने के पश्चात मेरे सामने शोध प्रबन्ध के अनेकों विषय थे। पर शिक्षणशास्त्र का स्नातक होने के कारण एक सृजनात्मक कल्पना ने मुझे झकझोर दिया और एक नये विषय पर अनुसंधान करने की भावना मेरे मन में जागृत हुई। डॉ.आनंद वास्कर जी से चर्चा के उपरांत मैंने अनुसंधान का विषय निश्चित किया ....

" हिन्दी भाषा की दृष्टि से पूर्वमाध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन "

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में पाँचवी से हिन्दी भाषा का अध्ययन करने वाला सातवीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र भाषिक कौशलों से अवगत होता है या नहीं ? प्रस्तुत कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें भाषिक कौशलों को अवगत कराने में पर्याप्त हैं या नहीं ? इसका शोध लेना यही मेरा उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सुविधा की दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय है -- विषय परिचय। इसमें पाठ्यचर्या,पाठ्यक्रम,पाठ्यपुस्तक, पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया इन विषयों पर विचार किया है।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी भाषा की संरचना,पूर्व माध्यमिक स्तर की दृष्टि से संरचना,पूर्व माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा अध्यापन के उद्देश्य, पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों द्वारा अवगत भाषिक ज्ञान वाचन,लेखन, भाषण,पूर्व माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा हिन्दी अध्यापन के उद्देश्य। आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की है।

तृतीय अध्याय में पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन भाषिक उद्देश्यों के आधार पर किया है। इसमें कक्षा पाँचवीं - वाचन लेखन, भाषण, कक्षा छठीं - वाचन, लेखन, भाषण, कक्षा सातवीं - वाचन, लेखन, भाषण आदि विषयों पर विचार व्यक्त किये हैं।

चतुर्थ अध्याय में पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी अध्ययन - अध्यापन और पाठ्यपुस्तकों की दृष्टि से कुछ नमुना छात्रों, अध्यापकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों से साक्षात्कार करने के बाद ठोस निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया है।

पंचम अध्याय में उपसंहार है, जो कि इस प्रबंध विषय का सार है। अंत में परिशिष्ट दिया गया है। परिशिष्ट के पूर्वार्ध में आधार ग्रंथ और उत्तरार्ध में संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले तथा मुझे प्रोत्साहित करने वाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध श्रद्धेय डॉ.आनंद वास्कर जी के सूक्ष्म निरीक्षण और निर्देशन का फल है। आप के पथ प्रदर्शन से ही यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। मैं वक्त बेवक्त मार्गदर्शन के लिए घर जाता रहा, फिर भी आप मेरा स्वागत प्रसन्न एवं हास्य मुद्रा से करते रहे। डॉ.सौ.वास्कर जी का भी मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मुझे हमेशा मिलता रहा। आप दोनों का मैं सदैव ऋणी रहूँगा और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा।

आदरणीय पूज्य गुरुवर्य डॉ.मोरे, डॉ.शाहा, डॉ.चव्हाण, डॉ.पाटील, प्रा.सौ.जाधव जी के प्रति भी मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

इसी के साथ मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यंत विनम्रता के साथ आप के अवलोकन के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में छपाई की गलती के कारण `हिंदी` शब्द हिन्दी के रूप में लिखा गया है।

श्री चिंदगे एस.पी.
शोध-छात्र

कोल्हापुर।
दिनांक ५ जून १९९५।